भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद

(पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय)

जैविक खेती में माइकोराइजल जैव उर्वरकों का उपयोग पर प्रशिक्षण: एक रिपोर्ट

फरवरी, 24 2024

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (हि.व.अ.सं.) द्वारा "जैविक खेती में माइकोराइजल जैव उर्वरकों का उपयोग" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 24 फ़रवरी 2024 को कृषि विज्ञान केंद्र, सरू, जिला चंबा में किया गया । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में चंबा जिले के 80 किसानों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य माइकोराइजल जैव उर्वरकों का उपयोग करके जैविक खेती पर किसानों के बीच जागरूकता पैदा करना था। प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. अश्वनी तपवाल, वैज्ञानिक-एफ, हि.व.अ.सं., शिमला, ने श्रीमती कंचन देवी, भा.व.से., महानिदेशक भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून, और अन्य प्रतिभागियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम में स्वागत किया। उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किए जाने वाले विषयों पर विस्तार से चर्चा की और बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने 'हिम मृदा संजीवनी-1 ' नामक माइकोराइजल जैव उर्वरक विकसित किया है, यह एक मिट्टी और वर्मीक्यूलाईट वाहक आधारित फॉर्मूलेशन है, जिसका उपयोग औषधीय पौधों, सब्जियों, फसलों और चौड़ी पत्ती वाली वृक्ष प्रजातियों की जैविक खेती के लिए किया जा सकता है। डॉ. तपवाल ने बताया कि संस्थान ने 'हिम ग्रोथ बूस्टर' नामक माइकोराइजल जैव उर्वरक भी विकसित किया है। यह कैप्सूल में रागी-टैल्क आधारित फॉर्मूलेशन है और इसे शंकुधारी पौधशाला में ग्रोथ बूस्टर के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

श्रीमती कंचन देवी ने अपने उद्घाटन भाषण में जैविक खेती पर अपने विचार सांझा किए और जैव उर्वरकों और जैव कीटनाशकों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने आगे कहा कि जैव उर्वरकों के उपयोग से फसलों की जैविक खेती में

लागत प्रभावी, पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ समाधान हैं। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को प्रेरित किया कि वे पर्यावरण के अनुकूल साधनों को अपनाए ंऔर फसल की खेती और रोग प्रबंधन में इनका उपयोग करें।

डॉ. संदीप शर्मा, निदेशक , हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने खेती में खाद और वर्मीकम्पोस्ट तैयार करने की प्रक्रिया को समझाने के लिए विस्तृत विवेचना की और यह बताया कि इससे कृषि उत्पादन में आधुनिकता और लाभ की वृद्धि हो सकती है। उन्होंने बताया कि औषधीय पौधों की खेती में कम्पोस्ट और वर्मीकम्पोस्ट का सही उपयोग करने से न केवल खेती में लागत कम होगी, बल्कि यह किसानों को अधिक लाभ भी प्रदान करेगा। इसके माध्यम से, वे अपनी फसलों को सुरक्षित और स्वस्थ बनाए रख सकते हैं और एक सतत खेती प्रणाली का भी अनुभव कर सकते हैं। डॉ. शर्मा ने यह भी बताया कि इस प्रकार की तकनीकें पर्यावरण के साथ मिलकर सही दिशा मे किसानों की मदद कर सकती हैं, जिससे स्थानीय प्रदूषण को कम किया जा सकता है तथा जैविक उत्पादों की उपलब्धता को भी बढ़ाया जा सकता है।

डा राजीव रैना वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कृषि विज्ञान केंद्र की गतिविधियों पर चर्चा की । इसके अतिरिक्त डॉक्टर संजीव चौहान डायरेक्टर रिसर्च व डॉक्टर इंद्रदेव डायरेक्टर एक्सटेंशन कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे।

डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक एफ और प्रमुख विस्तार प्रभाग हि.व.अ.सं. ने समशीतोष्ण औषधीय पौधों की जैविक खेती के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने किसानों को औषधीय पौधों की जैविक खेती के लिए प्रोत्साहित किया और संस्थान की नर्सरी में औषधीय पौधों के स्टॉक की उपलब्धता के बारे जानकारी साझा की।

1985

WELCOME

WELCOME

किसानों को जैविक खेती के लाभ बताए

संवाद सहयोगी, चनेड़ : किसानों को जैविक खेती के प्रति जागरूक किया गया और जैविक खेती में माइकोरिजल जैव उर्वरकों के उपयोग के बारे में जानकारी दी गई। किसानों को जैविक खेती के लाभ बताए गए। शनिवार को हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की ओर से जैविक खेती में माइकोरिजल जैव उर्वरकों के उपयोग को लेकर कृषि विज्ञान केंद्र सरू में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। माइकोरिजल जैव उर्वरकों का उपयोग करके जैविक खेती को किसानों को जागरूक करने के उद्देश्य से आयोजित कार्यक्रम में कंचन देवी महानिदेशक भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून विशेष रूप में मौजूद रहीं।

कार्यक्रम समन्वयक डा. अश्वनी तपवाल ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किए जाने वाले विषयों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने हिम मृदा संजीवनी नामक माइकोरिजल जैव उर्वरक विकसित किया है। यह एक-मिट्टी और वर्मीक्यूलाइट वाहक आधारित सूत्रीकरण है, जिसका उपयोग औषधीय पौधों, सब्जियों और चौड़ी पत्ती वाली फसलों की जैविक खेती के लिए किया जा सकता है।

डा. तपवाल ने बताया कि संस्थान ने हिम ग्रोथ बूस्टर नामक माइकोरिजल जैव उर्वरक भी विकसित किया है। इसे शंकुधारी पौधशाला में ग्रोथ बूस्टर के रूप में उपयोग किया जा सकता है। इससे शंकुधारी पौधों की नर्सरी अवधि कम हो जाएगी और रोपण को बेहतर क्षेत्र में स्थापित करने में भी मदद मिलेगी। वहीं महानिदेशक भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून कंचन देवी ने जैविक खेती पर विचार साझा किए और जैव उर्वरकों और जैव कीटनाशकों के महत्व पर प्रकाश डाला। कहा जैव उर्वरकों के उपयोग से फसलों की जैविक खेती में लागत प्रभावी, पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ समाधान है। प्रतिभागियों को प्रेरित करते हुए कहा कि पर्यावरण के अनुकूल साधनों को अपनाएं और फसल की खेती और रोग प्रबंधन में इनका उपयोग करें।

कृषि विज्ञान केंद्र सरू में आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में किसानों को संबोधित करतीं कंचन देवी महानिदेशक भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून। (दायें) कार्यक्रम में मौजूद कृषि विज्ञानी एवं किसान • जागरण

जागरण 25.02.2024

खेती को संजीवनी देगी हिममृदा, बढ़ेगी मिट्टी की गुणवत्ता

हर्षित शर्मा

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी के वैज्ञानिकों ने बनाया नया जैविक उर्वरक

शिमला। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान पंथाघाटी के वैज्ञानिकों ने माइकोराइजा से एक ऐसी नई जैव उर्वरक हिममृदा संजीवनी तैयार की है।

इससे प्रदेश में रासायनिक खेती से बढ़ रहे स्वास्थ्य खतरे कम होंगे और मिट्टी की गुणवत्ता में भी सुधार होगा। खास बात यह है कि इस उर्वरक को किसान खुद भी बना सकते हैं। इस उर्वरक को नर्सरी के साथ-साथ खेत में लगाने से पौधों के बायोमास उत्पादन में वृद्धि होगी। खासकर, इस उर्वरक को औषधीय पौधों और चौड़े पत्ते वाले पौधों के लिए बनाया गया है। इसको किसान छह महीने तक रख सकते हैं।

उर्वरक बनाने वाले वैज्ञानिक अश्वनी तपवाल ने बताया कि माइकोराइजा प्राकृतिक परिस्थितियों में व्यापक रूप से फैलता है और लगभग सभी प्रकार की मिट्टी में होता है। यह फसलों के लिए मिट्टी तक 95 प्रतिशत से अधिक पादप टैक्सा माइकोरिजल संघ बनाता है। फास्फोरस के अवशोषण में माइकोराइजा प्रमुख भूमिका निभाता है और मिट्टी में फास्फोरस की उपलब्धता को 60 से 80 प्रतिशत तक बढ़ा देता है। यह नाइट्रोजन अवशोषण और अन्य खनिजों की गतिविधि को भी बढ़ाता है। माइकोराइजा पौधों में होने वाली रासायनिक प्रक्रियाओं को बढ़ाता है और उन्हें रोग से भी बचाता है। दो शीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती के लिए फॉर्मूलेशन की प्रभावकारिता का मूल्यांकन किया गया था। नर्सरी और मैदानी परिस्थितियों में एंजेलिका ग्लौका और वेलेरियाना जटामांसी फार्मूलेशन हैं, जिसका उपयोग औषधीय पौधों, सब्जियों और चौड़ी पत्ती वाली फसलों की जैविक खेती के लिए किया जा सकता है। यह फॉर्मूलेशन कृषि विभाग हिमाचल प्रदेश के साथ पंजीकृत किया गया है। संवाद

मानव स्वास्थ्य के लिए होगा लाभदायक

पौधों, वैक्टीरिया या कवक जैसे प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त जैव कीटनाशक रासायनिक कीटनाशकों के लिए एक पर्यावरण-अनुकूल विकल्प प्रदान करते हैं। वे विशिष्ट कीटों को लक्षित करते हैं और लाभकारी जीवों का नुकसान कम करते हैं। कीटनाशक प्रतिरोधी कीटों के विकास के जोखिम को कम करते हैं। जैव कीटनाशक अकसर पर्यावरण में कम समय तक बने रहते हैं, जिससे मानव के स्वास्थ्य को भी खतरा नहीं होता है। कृषि पद्धतियों में जैव उर्वरकों और जैव कीटनाशकों को शामिल करके, किसान पारिस्थितिक तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव को कम करते हुए बेहतर उत्पादकता प्राप्त कर सकते हैं और एक स्वस्थ और अधिक टिकाऊ खाद्य उत्पादन प्रणाली को बढ़ावा दे सकते हैं।

अमर उजाला 26-02-2024

हिमालय वन अनुसंधान द्वारा कृषि विज्ञान केंद्र सरू में एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

SHARE THIS POST

चंबा

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान (हि.व.अ.सं.) द्वारा "जैविक खेती में माइकोराइजल जैव उर्वरकों का उपयोग" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 24 फ़रवरी 2024 को कृषि विज्ञान केंद्र, सरू, में किया गया । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में चंबा जिले के 80 किसानों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य माइकोराइजल जैव उर्वरकों का उपयोग करके जैविक खेती पर किसानों के बीच जागरूकता पैदा करना था। प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. अश्वनी तपवाल, वैज्ञानिक-एफ, हि.व.अ.सं., शिमला, ने श्रीमती कंचन देवी, भा.व.से., महानिदेशक भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून, और अन्य प्रतिभागियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम में स्वागत किया। उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किए जाने वाले विषयों पर विस्तार से चर्चा की और बताया कि हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने 'हिम मृदा संजीवनी-1 ' नामक माइकोराइजल जैव उर्वरक विकसित किया है, यह एक मिट्टी और वर्मीक्यूलाईट वाहक आधारित फॉर्मूलेशन है, जिसका उपयोग औषधीय पौधों, सब्जियों और चौड़ी पत्ती वाली फसलों की जैविक खेती के लिए किया जा सकता है। डॉ. तपवाल ने बताया कि संस्थान ने 'हिम ग्रोथ बूस्टर' नामक माइकोराइजल जैव उर्वरक भी विकसित किया है। यह कैप्सूल में रागी-टैल्क आधारित फॉर्मूलेशन है और इसे शंकुधारी पौधशाला में ग्रोथ बूस्टर के रूप में उपयोग किया जा सकता है। इससे शंकुधारी पौधों की नर्सरी अवधि कम हो जाएगी और रोपणों को बेहतर क्षेत्र में स्थापित करने में भी मदद मिलेगी।

श्रीमती कंचन देवी ने अपने उद्‌घाटन भाषण में जैविक खेती पर अपने बिचार सांझा किए और जैव उर्वरकों और जैव कीटनाशकों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने आगे कहा कि जैव उर्वरकों के उपयोग से फसलों की जैविक खेती में लागत प्रभावी, पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊ समाधान हैं। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को प्रेरित किया कि वे पर्यावरण के अनुकूल साधनों को अपनाएं और फसल की खेती और रोग प्रबंधन में इनका उपयोग करें।

डॉ. संदीप शर्मा, निदेशक , हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने खेती में खाद और वर्मीकम्पोस्ट तैयार करने की प्रक्रिया को समझाने के लिए विस्तृत विवेचना की और यह बताया कि इससे कृषि उत्पादन में आधुनिकता और लाभ की वृद्धि हो सकती है। उन्होंने बताया कि औषधीय पौधों की खेती में कम्पोस्ट और वर्मीकम्पोस्ट का सही उपयोग करने से न केवल खेती में लागत कम होगी, बल्कि यह किसानों को अधिक लाभ भी प्रदान करेगा। इसके माध्यम से, वे अपनी फसलों को सुरक्षित और स्वस्थ बनाए रख सकते हैं और एक सतत खेती प्रणाली का भी अनुभव कर सकते हैं। डॉ. शर्मा ने यह भी बताया कि इस प्रकार की तकनीकें पर्यावरण के साथ मिलकर सही दिशा में किसानों की मदद कर सकती हैं, जिससे स्थानीय प्रदूषण को कम किया जा सकता है।

डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक एफ और प्रमुख विस्तार प्रभाग हि.व.अ.सं. ने समशीतोष्ण औषधीय पौधों की जैविक खेती के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने किसानों को औषधीय पौधों की जैविक खेती के लिए प्रोत्साहित किया और संस्थान की नर्सरी में औषधीय पौधों के स्टॉक की उपलब्धता के बारे जानकारी साझा की।

HimbuMail News Service 25.02.2024

HFRI's New Sanjivini Miti for Himachal Farmers

Category: Latest Published: 24 February 2024 Hits: 677

Author: Magan Thakur/HimbuMailNewsService

CHAMBA/SHIMLA: In a bid to boost sustainable agriculture practices in Himachal Pradesh, the Himalayan Forest Research Institute (HFRI) has offered new Sanjivini HimMitti for farmers to rejig their crops .

HFRI organized a one-day training program on "Utilizing Mycorrhizal Biofertilizers in Organic Farming in Chamba."

Held at Krishi Vigyan Kendra, Saru, District Chamba, the event saw the active participation of 80 farmers from the region.

Led by Dr. Ashwani Tapwal, Scientist-F, HWSSmt, the program aimed to create awareness among farmers about the benefits of organic farming techniques employing mycorrhizal biofertilizers.

These biofertilizers, developed by HFRI, include 'Him Mitti Sanjeevani-1' and 'Him Growth Booster,' designed to enhance soil fertility and crop growth in an environmentally friendly manner.

During the inauguration, Smt. Kanchan Devi, ICS, Shimla, stressed the importance of adopting organic farming practices, citing their cost-effectiveness, environmental friendliness, and sustainability. She urged farmers to embrace these methods for better crop cultivation and disease management.

Dr. Sandeep Sharma, Director of HFRI, provided insights into the preparation of manure and vermicompost, emphasizing their potential to increase agricultural productivity and profitability.

Dr. Jagdish Singh, Scientist F, and Head Extension Division HWS, shed light on organic cultivation techniques for temperate medicinal plants, encouraging farmers to explore this avenue for enhanced yields and profitability.

The training program is expected to equip farmers with the necessary knowledge and skills to implement sustainable farming practices effectively.

By incorporating organic farming techniques and utilizing mycorrhizal biofertilizers, farmers in Himachal Pradesh can look forward to improved crop yields, reduced cultivation costs, and a healthier environment.

Himachal TV 25.02.2024